# प्रगटप्रभावी दादा श्रीजिनकुशलसूरि

[ भँवरलाल नाहटा ]

प्रगटप्रभावी, भक्तवत्सल बीसरे दादा साहब श्री जिनकुशलसूरि अत्यन्त उदार और अपने समय के युगप्रधान महापुरुष थे। आप मारवाड़-सामियाणा के छाजहड़ गोत्रीय मंत्रि देवराज के पुत्र जेसल या जिल्हागर के पुत्र थे और आपका जन्मनाम कर्मण था। सं० ११३७ मिती मार्गशीर्ष कृष्ण ३ सोमवार के दिन पुनर्वसु नक्षत्र में आपका जन्म हुआ। आपके खानदान में धार्मिक संस्कार अत्यन्त श्लाघनीय थे। खरतरगच्छ नायक, चार राजाओं को प्रतिबोध करने वाले कलिकाल-केवली श्री जिनचन्द्रसूरि के पास आपने वैराग्यवासित होकर सं० १३४७ फाल्गुन शुक्ला ८ के दिन दीक्षा ली। गुरुमहाराज संसारपक्ष में आपके चाचा होते थे। आपका दीक्षानाम कुशलकीर्ति रखा गया। उस समय उपाध्याय विवेकसमुद्र, गच्छ में गीतार्थ और वयोवृद्ध थे जिनके पास बड़े-बड़े विद्वान आचार्यों ने व्याकरण, न्याय, तर्क, अलंकार, ज्योतिष आदि का अध्ययन किया था। कुशलकीर्तिजी का विद्याध्ययन भी आपके पास हुआ और सर्वत्र विचरते हुए शासन प्रभावना करने लगे। सं० १३७५ माघसुदि १२ को आप गुरुमहाराज द्वारा वाचनाचार्य पद से विभूषित हुए।

सम्राट कुतुबुद्दीन से निर्विरोध तीर्थयात्रा का फरमान प्राप्त महतियाण अचलसिंह के साथ श्रीजिनचन्द्रसूरिजी महाराज हस्तिनापुर एवं मथुरा की यात्रा कर खंडासराय पधारे। वहाँ कम्परोग उत्पन्न होने पर अपना आयु-शेष निकट ज्ञात कर अपने पट्ट पर वा० कुशलकीर्ति गणि को अभिषिक्त करने का निर्देश-पत्र राजेन्द्रचन्द्राचार्य के नाम से विजयसिंह को सौंपा। सूरिजी राणा मालदेव चौहान की विनति से मेड़ता पधारे। वहां २४ दिन रहकर कोशवाणा पधारे और वहीं सं० १३७६ मिती आषाढ़ शुक्ल ६ को अनशनपूर्वक स्वर्गवासी हुए।

उस समय गुजरात की राजधानी पाटण में खरतरगच्छ का प्रभुत्व बढ़ा-चढ़ा था। गच्छ के कर्णधारों ने यहीं पर आचार्य पद-महोत्सव करने का निर्णय किया। बड़े-बड़े आचार्य व श्रमणों सहित गुजरात, सिंध, राजस्थान और दिल्ली प्रदेश आदि के संघ को निमन्त्रित कर बुलाया गया। सं० १३७७ मिती जेष्ठ कृष्ण ११ कुंभ लग्न में आचार्य पद का अभिषेक हुआ। उस समय राजेन्द्रचन्द्राचार्यजी के साथ उपाध्याय, वाचनाचार्यादि ३३ साधु और २३ साध्वियाँ थीं। सुश्रावक जाल्हण के पुत्र तेजपाल, रुद्रपाल, जो मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र बच्छावत के पूर्वज थे, ने प्रचुर द्रव्यव्यय कर महोत्सव मनाया। उन्होंने उस समय १०० आचार्य, ७०० साधु और २४०० साध्वियों को अपने घर बुलाकर प्रतिलाभ कर वस्त्र पहिराये। भीमपल्ली, पाटण, खंभात, बीजापुर आदि के संघ ने भी उत्सव में उल्लेखनीय योगदान किया था। वा० कुशलकीर्ति का नाम श्रीजिनकुशलसूरि प्रसिद्ध किया गया।

सूरिजी सं० १३७८ का चातुर्मास भीमपल्ली करके दीक्षा, मालारोपण, पदवी दान आदि अनेक धर्मप्रभावक कार्य करके अपने ज्ञानबल से विद्या-गुरु उपाध्यायश्री विवेकसमुद्रजी का आयुशेष निकट ज्ञातकर पाटण पधारे और ज्येष्ठ कृष्ण १४ के दिन उन्हें अनशन करवा दिया। उपाध्यायजी पंच-परमेष्ठी ध्यान पूर्वक ज्येष्ठ शुक्ल २ को स्वर्गवासी हुए। सूरिजी ने मिती आषाढ़ शुक्ल १३ के दिन उनके स्तूप की प्रतिष्ठा की और वहीं चातुर्मास किया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० १३७९ में मार्गशीर्ष कृष्ण ५ को अनेक नगरों के महर्द्धिक श्रावकों की उपस्थिति में सेठ तेजपाल ने शांतिनाथ विधिचैत्य में जलयात्रा सहित प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया। इसी दिन शत्रुंजय महातीर्थ पर खरतरवसही में मानतुंगप्रासाद की नींव डाली गयी। श्रीजिनकुशलसूरिजी ने शिला, रत्न और धातुमय १५० प्रतिमाएँ स्वकीय मूल समवशरणद्वय, जिनचन्द्रसूरि, जिनरत्नसूरि आदि के साथ नाना अधिष्ठायक मूर्तियों की प्रतिष्ठा की। इस महोत्सव में भीमपल्ली और आशापल्ली आदि के श्रावकों ने भी काफी सहयोग दिया था। प्रतिष्ठा के अनन्तर सूरि महाराज बीजापुर संघ की प्रार्थना से वहां पधारे और वासुपूज्य प्रभु के महातीर्थ की वंदना की। फिर त्रिशृङ्गम पधारे और संघ सहित तारंगाजी एवं आरासण तीर्थों की यात्रा की। मन्त्रीदलीय जगतसिंह ने स्वधर्मी वात्सल्य, ध्वजारोपादि कई उत्सव किये। सूरिजी ने यात्रा से लौटकर पाटण चातुर्मास किया।

सं० १३८० में सेठ तेजपाल रुद्रपाल के मानतुंगविहार जिनालय के योग्य मूलनायक युगादीश्वर भगवान की २७ अंगुल की कर्पूर-धवल प्रतिमा, जिनप्रबोधसूरि, जिनचन्द्रसूरि, कपर्दी यक्ष, क्षेत्रपाल, अंबिकादि एवं ध्वजदण्डादि के साथ अन्य श्रावकों की निर्मापित बहुत सी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा करवायी। मार्गशीर्ष कृष्ण ६ को मालारोपण व्रतग्रहण, नन्दी महोत्सवादि विस्तार से उत्सव हुए।

दिल्ली निवासी सेठ रयपति ने सम्राट गयासुद्दीन तुगलक से तीर्थयात्रा के लिए फरमान प्राप्त कर श्रीजिनकुशलसूरिजी से अनुमति मगाई, फिर विशाल संघ के साथ वै० कृ० ७ को प्रयाण करके कन्यानयन, नरभट, फलौदी पार्श्वनाथ की यात्रा कर देश-विदेश के संघ सहित मार्गवर्ती तीर्थस्थान करते हुए पाटण पहुँचे। श्रीजिनकुशलसूरिजी को भी अत्यन्त आग्रहपूर्वक संघ के साथ पधारने की विनती की। सूरिजी १७ साधु और १९ साध्वियों के साथ संघ में सम्मिलित हो संखेश्वर तीर्थादि की यात्रा करते हुए आषाढ़ कृष्ण ६ के दिन शत्रुंजय पहुँचे। वहाँ उसी दिन दो दीक्षाएँ हुईं। दूसरे दिन समवसरण, जिनपतिसूरि, जिनेश्वरसूरि आदि गुरुमूर्तियों की प्रतिष्ठा के साथ पाटण में पूर्व प्रतिष्ठित युगादिदेव भगवान को स्थापित किया। आषाढ़ कृष्ण ९ के दिन व्रतग्रहण, नन्दी महोत्सवादि के साथ-साथ सुखकीर्ति गणि को वाचनाचार्य पद दिया। उस यात्रीसंघ के द्वारा तीर्थ के भण्डार में ५००००) रुपये की आमदनी हुई।

यह विशाल यात्री संघ सूरिजी के साथ आषाढ़ सुदि १४ को गिरनार पहुँचा, यहाँ भी संघ के द्वारा विविध उत्सवादि हुए। तीर्थ के भंडार में ४००००) रुपये की आमदनी हुई। आनन्द के साथ यात्रा सम्पन्न कर श्रावण शुक्ल १३ को पाटण पधारे। १५ दिन तक नगर के बाहर उद्यान में ठहर कर भाद्रपद कृष्ण ११ को समारोह पूर्वक नगर-प्रवेश हुआ, तदनन्तर संघ ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

संवत् १३८१ मिती वैशाख कृष्ण ५ को पाटण के शांतिनाथ विधिचैत्य में सूरिजी के करकमलों से विराट प्रतिष्ठा-महोत्सव संपन्न हुआ। इनमें जालोर, देरावर तथा शत्रुंजय (बूल्हावसही और अष्टापद प्रासाद के लिए २४ बिंब), उच्चानगर के लिए अगणित जिन प्रतिमाएं तथा पाटण के लिए जिनप्रबोधसूरि, देरावर के लिए जिनचन्द्रसूरि, अंबिका आदि अधिष्ठायक व स्वभंडार योग्य समवसरण की भी प्रतिष्ठा की। वैशाख कृष्ण ६ के दिन दो बड़ी दीक्षाएँ, पांच साधु-साध्वियों की दीक्षा, जयधर्म गणि को उपाध्याय पद तथा अन्य व्रत ग्रहणादि विस्तार से हुए।

सूरिमहाराज को वीरदेव आदि ने पाटण से अत्यन्त आग्रह पूर्वक भीमपल्ली बुलाया। संघ ने सम्राट गयासुद्दीन से तीर्थयात्राके हेतु फरमान प्राप्त कर ज्येष्ठ कृष्ण ५को भीमपल्ली से प्रयाण किया। सूरिजी के साथ १२ साधु और कई साध्वियां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भी थीं। संघ वायड़, सैरिसा, सरखेज, आशापल्ली होते हुए खंभात पहुँचा। जिस प्रकार जिनेश्वरसूरिजी के पधारने पर सं० १२८६ में महामंत्री वस्तुपाल ने एवं स० १३६४-६७ में सेठ जेसल ने श्री जिनचन्द्रसूरिजी का प्रवेशोत्सव किया था उसी प्रकार सूरिजी का इस समय धूमधाम से प्रवेशोत्सव हुआ। आठ दिन तक नाना उत्सवादि संपन्न कर आनन्दपूर्वक यात्रा करते हुए शत्रुंजय की ओर चले। धांधूका में मन्त्रीदलीय ठ० उदयकरण ने संघ की बहुत भक्ति की। शत्रुंजय पहुँच कर सूरिजी ने दूसरी बार यात्रा की। तीर्थ के भंडार में १५००० की आमदनी हुई। आदिनाथ प्रभु के विधि-चैत्य में नवनिर्मित चतुर्विंशति जिनालय, देवकुलिकाओं पर कलश व ध्वजादि का आरोपण हुआ। संघ सहित सूरिमहाराज तलहटी में आये। लौटते समय सैरिसा, संखेश्वर, पाडल होते हुए श्रावण शुक्ला ११ को भीमपल्ली पधारे।

सं० १३८२ वैशाख शुक्ला ५ को विनयप्रभ, मतिप्रभ, हरिप्रभ, सोमप्रभ साधु एवं कमलश्री, ललितश्री को समारोहपूर्वक दीक्षा दी। पत्तन, पालनपुर, बीजापुर, आशापल्ली आदि का संघ भी उपस्थित था। तीन दिन अमारि उद्घोषणा के साथ बड़े उत्सव हुए। फिर सूरिजी साचौर पधारे। मासकल्प करके लाटह्रद पधारे। संघ के आग्रह से बाड़मेर में चौमासा करके श्री जिनदत्तसूरि रचित चैत्य-वंदनकुलक पर विस्तृत वृत्ति की रचना की। सं० १३८३ पौष शुक्ला १५ को जेसलमेर, लाटह्रद, साचौर, पालनपुरीय संघ के समक्ष अमारि-घोषणापूर्वक बड़ी दीक्षा आदि अनेक उत्सव हुए। तदनन्तर जालोर संघ की विनती से विहार करके लवणखेटक पधारे। यहाँ सूरिजी के पूर्वज उद्धरण वाहित्रिक कारित शांतिनाथ-जिनालय था एवं गुरु जिनचन्द्रसूरिजी का जन्म एवं दीक्षा यहीं हुई थी। यहाँ से समियाणा ( जन्मभूमि ) होते हुए जालोर पधारे। यहां उच्चपुर, देवराजपुर, पाटण, जेसलमेर, सिवाणा, श्रीमाल, साचौर, गुढहा आदि के संघ के समक्ष पंद्रह दिन तक दीक्षार्थियों के सत्कार सहित फाल्गुन कृष्ण ६ को दीक्षा, प्रतिष्ठा, व्रतोच्चारणादि विविध उत्सव हुए। राजगृह तीर्थ के वैभारगिरि स्थित चतुर्विंशति जिनालय के मूलनायक महावीर स्वामी आदि अनेक पाषाण और धातुमय बिम्ब गुरुमूर्तियां आदि की प्रतिष्ठा एवं न्यायकीर्त्ति ललितकीर्त्ति, सोमकीर्त्ति अमरकीर्त्ति, ज्ञानकीर्त्ति, देवकीर्त्ति-६ साधुओं को दीक्षित दिया।

जालोर से चैत्र कृष्ण में विहार कर समियाणा, खेड़ नगर होते हुए जेसलमेर महादुर्ग पधारे। सिन्ध देश के श्रावक अपने उधर पधारने के लिए बार-बार वीनति कर रहे थे अतः पद्रह दिन रहकर सिंध देश के देरावर नगर में पधारे। वहां स्वप्रतिष्ठित आदिनाथ प्रभु का वन्दन किया। फिर उच्चनगर पधारकर हिन्दु-मुसलमान सबको धर्मोपदेशों से आनन्दित किया। एक मास रहकर वापिस देरावर पधारे। सं० १३८४ माघ शु० ५ को उच्च, देरावर, क्यासपुर बहरामपुर, मलिकपुर के श्रावकों और अधिकारियों के अनुरोध से प्रतिष्ठा, व्रतग्रहण आदि बड़े विस्तार से सम्पन्न किये। राणुककोट, क्यासपुर के लिए दो आदिनाथ मूलनायकबिंब व धातु-पाषाण की अनेक प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की। भावमूर्त्ति, मोदमूर्त्ति, उदयमूर्त्ति, विजयमूर्त्ति, हेममूर्त्ति, भद्रमूर्त्ति, मेवमूर्त्ति, पद्ममूर्त्ति, हर्षमूर्त्ति आदि नौ साधु, कुलधर्मा, विनयधर्मा और शीलधर्मा नामक तीन साध्वियों की दीक्षा हुई।

सं० १३८५ फाल्गुन शु० ४ के दिन उच्चापुर, बहिरामपुर, क्यासपुर के खरतर गच्छीय संघ की विद्यमानता में नवदीक्षितों की उपस्थापना, अनेकों व्रतग्रहण व कमलाकर गणि को वाचनाचार्य पद दिया। सं० १३८६ में बहिरामपुर पधारे। वहां धर्मप्रभावना कर क्यासपुर के हिन्दु-मुसलमान सबको आनन्दित किया। ६ दिन उत्सवादि के पश्चात् खोजावाहन पधारकर क्यासपुर पधारे। मुसल-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मान नबाब और सभीलोगों द्वारा सूरिजी का ऐसा प्रवेशोत्सव किया गया जो सं० १२३८ में अन्तिम हिन्दू सम्राट पृथ्वीराज द्वारा किये अजमेर के उत्सव की याद दिलाता था। तदनन्तर देरावर पधार कर सं० १३८६ का चतुर्मास वहीं किया। बारह साधुओं के साथ उच्चानगर जाकर मासकल्प किया। फिर अनेक ग्राम नगरों में विचरते हुए परशुरोरकोट गए। वहां से बहिरामपुर होते हुए उग्रविहारी श्री जिनकुशलसूरिजी देरावर पधारे और सं० १३८७ का वहीं चातुर्मास वहीं किया।

सं० १३८८ में उच्चापुर, बहिरामपुर, क्यासपुर, सिलारवाहण आदि सभी स्थानों के श्रावकों की उपस्थिति में मार्गशीर्ष शु० १० को व्रतग्रहणादि नन्दीमहोत्सवपूर्वक विद्वत् शिरोमणि तरुणकीर्त्ति को आचार्य पद देकर तरुणप्रभाचार्य नाम से प्रसिद्ध किया। पं० लब्धिनिधान को उपाध्याय पद दिया, जयप्रिय, पुण्यप्रिय एवं जयश्री, धर्मश्री, को दीक्षित किया। सं० १३८९ का चातुर्मास देरावर में किया और तरुणप्रभाचार्य व लब्धिनिधानोपाध्याय को स्याद्वादरत्नाकर, महातर्क रत्नाकर आदि सिद्धान्तों का परिशीलन करवाया। माघ शुक्ल में तीव्रज्वर व श्वास की व्याधि होने पर अपना आयुशेष निकट ज्ञातकर श्री तरुणप्रभाचार्य व लब्धिनिधानोपाध्याय को अपने पद पर पद्ममूर्त्ति को गच्छनायक बनाने की आज्ञा देकर अनशन करके मति फाल्गुन कृष्ण ५ की रात्रि के पिछले पहर में स्वर्ग सिधारे। विद्युत्गति से समाचार फैलते ही सिन्धु देश के गाँवों के लोग देरावर आ पहुंचे। फा० कृ० ६ को ७५ मंडपिकाओं से मंडित निर्यान विमान में विराजमान कर बड़े महोत्सवपूर्वक शोकाकुल संघ ने नगर के राजमार्गों से होते हुए सूरिजी के पावन शरीर को स्मशान में ले जाकर अग्निसंस्कार किया।

सूरिजी के अग्नि-संस्कार स्थान में सुन्दरस्तूप निर्माण किया गया जो आगे चलकर तीर्थ रूप हो गया। मिती ज्येष्ठ शुक्ल ९ को हरिपाल कारित आदिनाथ प्रतिमा, देरावर स्तूप, जेसलमेर और क्यासपुर के लिये श्रीजिनकुशलसूरिजी की तीन मूर्तियों का प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। आपके पट्टधर श्रीजिनपद्मसूरि का पदस्थापना महोत्सव बड़े धूम-धाम से हुआ। श्रीजिनपद्मसूरिजी ने ५ उपाध्याय १२ साधुओं के साथ जेसलमेर पधारकर चातुर्मास किया। इनके अतिरिक्त आपका शिष्य परिवार बहुत बड़ा था। उ० विनयप्रभ, सोमप्रभ इत्यादि की परम्परा में बहुत से बड़े-बड़े विद्वान और ग्रन्थकार हुए हैं। विनयप्रभोपाध्याय का गौतमरास जैन समाज में बहुप्रचलित रचना है आपका संस्कृत में नरवर्मचरित्र एवं कई स्तोत्रादि उपलब्ध हैं।

श्रीजिनकुशलसूरि जी ने अपने जीवन में शासन की बड़ी प्रभावना की उन्होंने पचास हजार नये जैन बनाकर परम्परा-मिशन को अक्षुण्ण रखा। आप उच्चकोटि के विद्वान और प्रभावशाली व्यक्ति थे। दादाश्रीजिनदत्तसूरि जी कृत चैत्यवंदन कुलक नामक २७ गाथा की लघु कृति पर ४००० श्लोक परिमित टीका रचकर अपनी अप्रतिम प्रतिभा का उदाहरण प्रस्तुत किया है। इसमें २४ धर्म कथाएँ हैं जिनमें श्रेणिक महाराज कथा तो ९४५ श्लोक परिमित हैं। इस ग्रन्थ में अनेक सिद्धान्तों के प्रमाण भी उद्धृत हैं। आपकी दूसरी कृति श्रीजिनचन्द्रसूरि चतुःसप्ततिका प्राकृत की ७४ गाथाओं में है। इसके अतिरिक्त कई स्तोत्रादि भी संस्कृत में अनेक रचे थे, जिनमें ९ स्तोत्र उपलब्ध हैं।

आप अपने जीवितकाल में जिस प्रकार जैन संघ के महान् उपकारी थे स्वर्गवास के पश्चात् भी भक्तों के मनोवांछित पूर्ण करने में कल्पवृक्ष के सदृश हैं। आपने अनेकों को दर्शन दिए हैं और स्मरण करने वालों के लिए हाजरा हजूर हैं। यही कारण है कि आज ६३७ वर्ष बीत जाने पर भी आप प्रत्यक्ष हैं। आप भुवनपति-महर्द्धिक कर्मेन्द्र नामक देव हैं। जीवितकाल में भी धरणेन्द्र आपका भक्त था और स्वर्ग में भी धरणेन्द्र-पद्मावती इन्द्र-इन्द्राणी से अभिन्न मैत्री है। आज सारे भारतवर्ष में आपके जितने चरण व मूर्तियाँ-दादावाड़ियाँ हैं, अन्य किसी के नहीं। यहां एक गुरुदेव के महत्व का साक्षात् उदाहरण हैं। ९-१० वर्ष बाद आपके जन्म को सात सौ वर्ष पूरे होते हैं आशा है भक्त गण अष्टम जन्म शताब्दी बड़े समारोह से मनाकर समाज में नवचेतना जागृत करेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

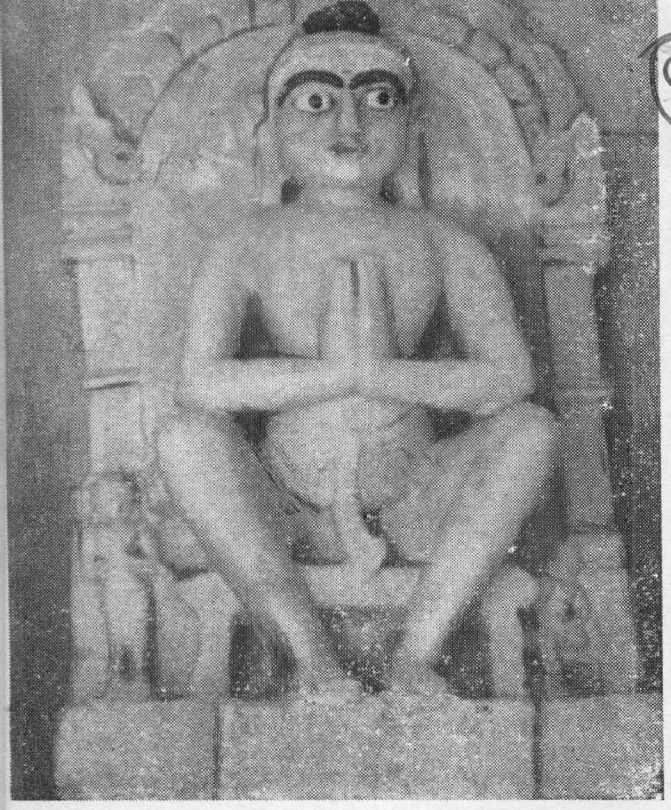

कटप्रभावोदादा श्रीजिनकुशलसूरि मूर्ति बड़े दादाजी, (महरौली)

श्रीजिनप्रभसूरि मूर्ति (खरतरबसही, शत्रुञ्जय)

युगप्रधानश्रीजिनचन्द्रसूरि (चतुर्थ दादा)
ऋषभदेव जिनालय (बीकानेर)

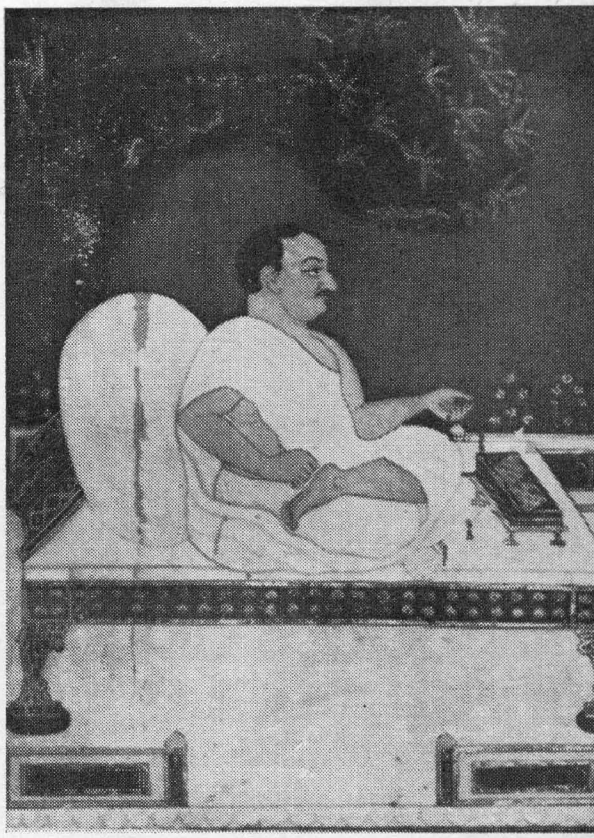

श्रीपूज्य श्रीजिनमहेन्द्रसूरिजी महाराज

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० ६३७ में श्री उद्योतनसूरि प्रतिष्ठित
आदिनाथ प्रतिमा गांगाणीतीर्थ

सं० १०८३ प्र० आदिनाथ पंचतीर्थी
जैन श्वे० पचायती मंदिर, कलकत्ता

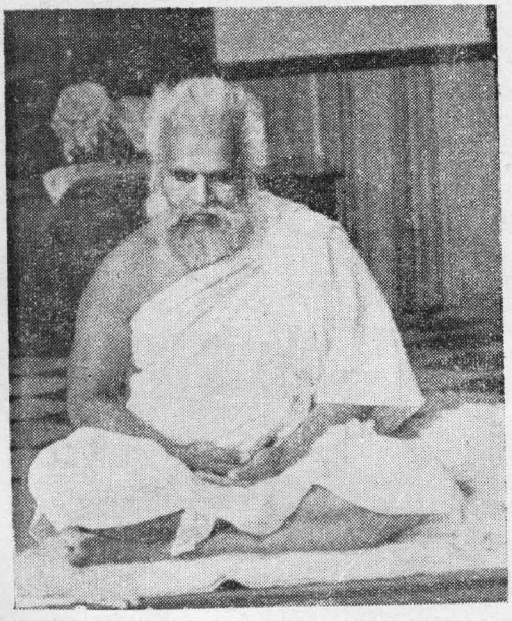

जैनाचार्य श्रीजिनकृपाचन्द्रसागरसूरिजी

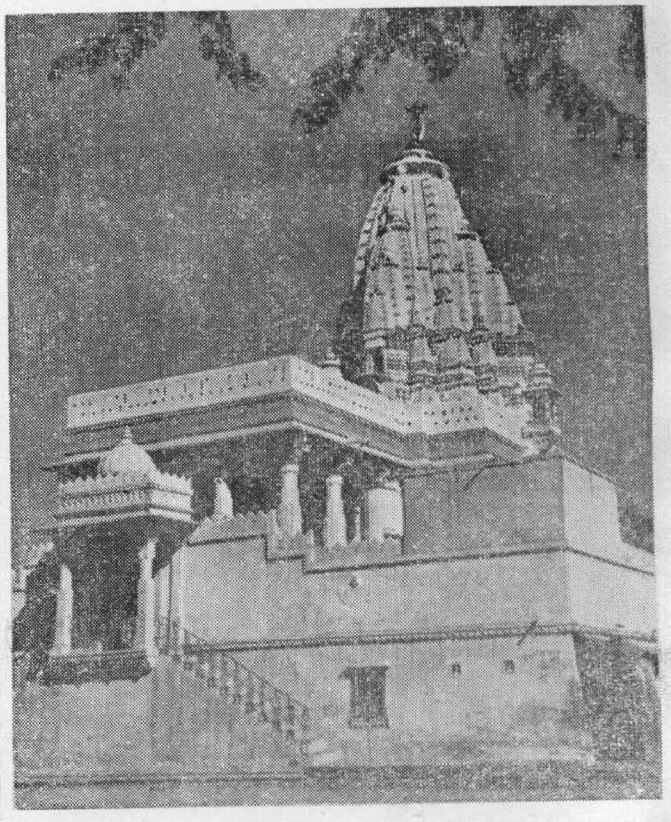

श्री जैन श्वेताम्बर मन्दिर गांगाणी तीर्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org